ॐ ऋणनिर्देश ॐ

मैने आज तक के पढाई के दौरान अनेक साहित्य रचनाएँ पढी। इसमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र और व्यंग्य साहित्य आदि का अध्ययन करने का मुझे अवसर मिला। इस समय मुझे अनेक साहित्यकारों की रचनाओं ने प्रभावित किया। उन साहित्यकारों में, प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई, अज्ञेय, फणीश्वरनाथ रेणु आदि साहित्यकारों का साहित्य पढना मुझे अच्छा लगता था और मैं एम. ए. की पढाई कर रहा था, उस समय डॉ. नरेन्द्र कोहलीजी का 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' यह 'व्यंग्य' साहित्य मेरे पढने में आया। इस 'व्यंग्य' में डॉ. नरेन्द्र कोहली ने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक चेतना को आधार बनाकर उनकी समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

जब मेरी एम. ए. की पढाई पद्मभूषण वसंतदादा पाटील कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, पाटोदा में शुरू थी। उसी समय अनेक शोधकार्य करनेवाले प्राध्यापकों से मेरा संपर्क स्थापित हुआ। तब मैं उनके शोध कार्य संबंधी बडी बडी किताबे देखकर उनसे कई सवाल कर मेरे जिज्ञासा की पूर्ति करने का प्रयास करता था। उसी समय मैने मन ही मन में संकल्प किया की मुझे भी भविष्य में इस प्रकार का शोध कार्य करना है। मैं बस उसी दिन के इंतजार में था की मेरा संकल्प पूरा हो।

एम. ए. के पश्चात र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, गेवराई में मेरा अध्यापक के रूप में चयन हो गया। तब अर्थाभाव की समस्या मेरे सामने नहीं थी। मेरे अंदर की जिज्ञासा वृत्ति, हमेशा मुझे इस कार्य के प्रति प्रेरित करती रही। कौन–सी विधा में शोध कार्य किया जाए? यह समस्या मेरे सामने खडी हुई। अनेक दोस्तों के साथ मैंने इस बारे में चर्चा की और मुझे समाधान देनेवाली बात निश्चित हुई। मैंने डॉ. नरेन्द्र कोहली का 'व्यंग्य' साहित्य को ही शोधकार्य हेतु विषय रूप में स्वीकार किया।

जब मैंने पीएच. डी. करने का निश्चय किया तब संशोधन का विषय और मार्गदर्शन का विषय मेरे सम्मुख उपस्थित हुआ। मैं कुछ मार्गदर्शको से मिला। विविध विषयों पर चर्चा हुई। कई विषय सामने आये। इन सभी विषयों पर विचारमंथन करने के बाद मेरे दिल की आवाज सुनाई पडी क्यों न मैं डॉ. नरेन्द्र कोहलीजी का 'व्यंग्य साहित्य पर संशोधन करूँ?' मेरे आदरणीय गुरूवर्या डॉ. रागिनी दिलीप बाबर से विचार विमर्श करने के बाद अंत में मैने ''डॉ. नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक चेतना'' यह विषय संशोधन के लिए चुना। डॉ. बाबर मॅडम निर्देशन करने मेरी हट, जिद्द, लगन और परिश्रम को देखकर मार्गदर्शन करने के लिए समर्थन दिया। सच्चाई और ईमानदारी का उदात्त रूप डॉ. बाबर मॅडम दुसरों के हित में अपना हित, त्याग और समर्पण में श्रेष्ठता देखने की मूल प्रवृत्ति है। आदरणीय डॉ. बाबर मॅडम मुझे अपने कर्तव्य को बार–बार याद दिलाते हुए विचार विमर्श करके मार्गदर्शन किया और कार्य आगे बढता गया। इस तरह आज डॉ. बाबर मॅडम के कुशल एवं परिपक्व मार्गदर्शन में मैने अपना शोधकार्य पूर्ण किया। डॉ. बाबर मॅडम ने अपना अमूल्य समय देकर आत्मीयतापूर्वक मार्गदर्शन किया। उनका यह ऋण मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकूँगा।

इस शोधकार्य को पूर्ण करने में तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के पदाधिकारियों का और डॉ. श्रीपाद भट सर का सहृदय आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे शोधकार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु जिन्होंने मूल प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्रदान किया वे मेरे शक्तिस्त्रोत पूज्य आदरणीय दादाजी स्वर्गीय रामभाऊ जाधव, पूज्य दादीजी स्वर्गीय चंद्रभागा जाधव, पिताश्री जयसिंगराव जाधव एवं माताजी द्वारका जाधव तथा बड़े भाई शेषेराव जाधव, उनकी पत्नी सौ. सखुबाई जाधव, उनके दो प्यारे बच्चे भारती, शिवराज के प्रति कृतज्ञता करना शब्दों से परे है।

इस ज्ञान यज्ञ में सदैव सहयोग प्रदान करनेवाली मेरी काकी सौ. संगिता जाधव, सौ. मंगल जाधव, सौ. निर्मला जाधव, सौ. शितल अतुल पवार, सौ. स्नेहल सचिन आगाम, कु. गितांजली जाधव, मयुर जाधव, हर्षवर्धन जाधव, शिवेंद्र जाधव, अमृता जाधव, मा. आ.

लक्ष्मणराव जाधव, मा. श्री. भिमराव (मामा) जाधव, डॉ. सुनील जाधव, मेरे जिजाजी श्री. किशोर सालपे और श्री. सुनील मते और मेरी बहनें सौ. अंजना सालपे, रंजना मते उनके बेटे राहुल सालपे, शुभांगी सालपे और मयुर मते, सोनाली मते, राणी मते और मेरे मित्र डॉ. नाना गवारे, डॉ. कल्याण पोकळे, डॉ. ज्योती पोकळे, प्रा. अभय शिंदे, डॉ. लक्ष्मीकांत पंडित, डॉ. विनोद ओस्तवाल, डॉ. अविनाश शिंदे, डॉ. रविंद्र गोरे, डॉ. अशोक मुंढे, प्रा. रमेश लांडगे, प्रा. अंकुश गोंडगे, प्रा. महेश वाघमारे, डॉ. सय्यद सर, डॉ. वंदन जाधव, श्री. कुणाल काळे, श्री. ब्रह्मानंद बिनवडे, श्री. जितेंद्र कांकरीया, बाबासाहेब नाईकनवरे, श्री. कैलास नेमाणे, श्री. संतोष तांबे, मेरे परममीत्र श्री. दर्शन कांकरीया, अमोल कांकरीया, अमोल दीक्षित, वैभव वासकर, चंदन कांकरीया, अमित बोरा, विलास कुलकर्णी, विनोद कोळपकर, विलास डिडुल, निखिल कांकरीया, रितेश शर्मा, सुशिल ढोले, युवराज जेधे, डॉ. ईमरान शेख, मनोज खोले, अभिनंदन कांकरीया, सुशिल वीर, चेतन गवारे, सतीष मस्के, बापूराव मस्के, नायब तहसिलदार गणेश दिगंबरराव जाधव, और जयभवानी के सभी शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारी, र. भ. अट्टल महाविद्यालय के शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारी और बलभीम महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. वसंत सानप इन्होने मेरे शोध कार्य में बिना शिकायत जो सहयोग प्रदान किया, उसे कदापि भूलाया नहीं जा सकता।

इस प्रबंध के टंकलेखन का कार्य यथासंभव शुद्ध एवं सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए पुना के आदिती एंटरप्रायजेस के संचालक, अंकुश सिताराम देशमुख इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

जाधव संभाजी जयसिंगराव

शोध–छात्र